



DR. RATTAN SINGH JAGGI

Dr. Rattan Singh Jaggi is an eminent scholar of Punjabi and Hindi Literature with Gurmat & Bhakti movement literature being his forte.

2. Born on 27th July, 1927, Dr. Jaggi has devoted more than 60 years of his life to serve the cause of medieval literature. He retired as Professor and Head of Punjabi Literary Studies Department of Punjabi University, Patiala in 1987. His literary works include books, commentaries and encyclopedias. Despite being 95 years of age, he is still continuing his literary stint untiringly and indefatigably.

3. Dr. Jaggi obtained Ph.D in 1962 for "Critical study of Pauranik compositions in Dasam Granth" and was awarded D.Litt. in 1973 on the subject "Guru Nanak: His personality, works & teachings". In 2000, he came out with meticulous commentary of Dasam Granth in five volumes. He is considered an authority on the Dasam Granth and his works got accolades in immense measure from the prominent literary personalities. Continuing his literary contribution to the society, he authored many books on Shri Guru Nanak Dev ji and during the 550th Prakash Purb celebrations Punjab Government published "Guru Nanak Bani: Paath atey Vyakhya" prepared by him in Punjabi and Hindi. He also published a treatise on Guru Nanak bani namely "Guru Nanak: Jeevni atey Vyaktitvatva" and second book "Guru Nanak di Vichardhara", both of which were awarded by the Languages Department, Punjab. One of his most significant is the transliteration and translation of glorious holy book "Tulsi Ramayan" (Ram Charit Manas) in Punjabi. The book is recipient of the National Award by the Sahitya Akademi in 1989. He readied Reference Dictionary of Punjabi Literature in 1994. He also prepared five volume History of Punjabi Literature.

4. Dr. Jaggi compiled "Guru Granth Vishavkosh" (Encyclopedia) in 2002 and Encyclopedia of Sikhism in 2005 and also a five-volume sub-commentary of Sri Guru Granth Sahib titled "Arthbodh Sri Guru Granth Sahib" in 2007. It was in 2013 that he rendered his biggest service to the cause of Sikhism preparing comprehensive commentary of Sri Guru Granth Sahib namely "Bhav Prabodhini Teeka-Sri Guru Granth Sahib". It contains detailed explication of Sri Guru Granth Sahib and is proving to be immensely invaluable for humanity. The year 2017 saw him publishing five volumes of this commentary in Hindi also.

5. Dr. Jaggi has been conferred with many honours including National award in 1989 by the Sahitya Akademi, New Delhi, "Punjabi Sahit Rattan" the Highest State Award by the Punjab Government in 1996 and in addition eight times his books got first prize by Languages Department, Punjab and once from Haryana Government also in 1968. The Punjabi Academy under the aegis of Delhi Government honoured him with "Param Sahit Satkar Sanman" in 2010 with the Uttar Pradesh Government felicitating him with "Souhard Sanman" in 1996. Punjab Kala Parishad of Punjab Government honored him with Punjab Gaurav Sanman in 2022.



डॉ. रतन सिंह जग्गी

डॉ. रतन सिंह जग्गी पंजाबी और हिंदी साहित्य के एक प्रख्यात विद्वान हैं तथा गुरुमत और भक्ति आंदोलन साहित्य उनके लेखन की प्रमुख विशेषता है।

2. 27 जुलाई, 1927 को जन्मे, डॉ. जग्गी ने अपने जीवन के 60 से अधिक वर्ष मध्ययुगीन साहित्य की सेवा के प्रति समर्पित किए हैं। वह 1987 में पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के पंजाबी साहित्य अध्ययन विभाग के प्रोफेसर और अध्यक्ष के रूप में सेवानिवृत्त हुए। उनकी साहित्यिक कृतियों में पुस्तकें, टीकाएं और विश्वकोश शामिल हैं। 95 वर्ष की आयु में भी वह अपना साहित्यिक कार्य अथक और अनवरत रूप से जारी रखे हुए हैं।

3. डॉ. जग्गी ने 1962 में "दशम ग्रंथ में पौराणिक रचनाओं का महत्वपूर्ण अध्ययन" के लिए पीएच.डी की डिग्री प्राप्त की और 1973 में उन्हें "गुरु नानक: उनका व्यक्तित्व, कार्य और शिक्षाएं" विषय पर डी.लिट से सम्मानित किया गया। 2000 में, उन्होंने पांच खंडों में दशम ग्रंथ की विद्वतापूर्ण टीका लिखी। उन्हें दशम ग्रंथ का विद्वान माना जाता है और उनकी कृतियों को प्रमुख साहित्यिक हस्तियों की अपार प्रशंसा प्राप्त हुई है। समाज में अपने साहित्यिक योगदान को जारी रखते हुए, उन्होंने श्री गुरु नानक देव जी पर कई पुस्तकें लिखीं और 550वें प्रकाश पर्व समारोह के दौरान पंजाब सरकार ने पंजाबी और हिंदी में उनके द्वारा लिखी "गुरु नानक बानी: पाठ अते व्याख्या" प्रकाशित की। उन्होंने गुरु नानक बानी पर एक पुस्तक, जिसका नाम "गुरु नानक: जीवनी अते व्यक्तित्व" और दूसरी पुस्तक "गुरु नानक दी विचारधारा" भी प्रकाशित की। इन दोनों पुस्तकों को भाषा विभाग, पंजाब द्वारा सम्मानित किया गया था। उनका सबसे उल्लेखनीय कार्य पवित्र महाकाव्य "तुलसी रामायण" (रामचरित मानस) का पंजाबी में लिप्यंतरण और अनुवाद है। इस पुस्तक को 1989 में साहित्य अकादमी द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उन्होंने 1994 में पंजाबी साहित्य का संदर्भ शब्दकोश तैयार किया। उन्होंने पंजाबी साहित्य का इतिहास के पांच खंड भी तैयार किए।

4. डॉ. जग्गी ने 2002 में "गुरु ग्रंथ विश्वकोश" और 2005 में सिख धर्म का विश्वकोश और 2007 में "अर्थबोध श्री गुरु ग्रंथ साहिब" नामक श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पांच खंडों की उप-टीका भी संकलित की। 2013 में उन्होंने सिख धर्म के प्रति अपनी सबसे बड़ी सेवा के रूप में, श्री गुरु ग्रंथ साहिब की "भाव प्रबोधिनी टीका—श्री गुरु ग्रंथ साहिब" नामक विशद टीका लिखी। इसमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब की विस्तृत व्याख्या शामिल है और यह मानवता के लिए बहुत अनमोल सिद्ध हो रही है। वर्ष 2017 में उन्होंने हिंदी में भी इस टीका के पांच खंड प्रकाशित किए।

5. डॉ. जग्गी को अनेक सम्मान प्रदान किए गए हैं जिनमें साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा 1989 में राष्ट्रीय पुरस्कार, 1996 में पंजाब सरकार द्वारा सर्वोच्च राज्य पुरस्कार "पंजाबी साहित्य रतन" शामिल है। इसके अलावा, आठ बार उनकी पुस्तकों को भाषा विभाग, पंजाब और एक बार 1968 में हरियाणा सरकार द्वारा भी प्रथम पुरस्कार मिला। दिल्ली सरकार के तत्वावधान में पंजाबी अकादमी ने उन्हें 2010 में "परम साहित्य सत्कार सम्मान" और उत्तर प्रदेश सरकार ने उन्हें 1996 में "सौहार्द सम्मान" प्रदान किया। पंजाब सरकार की पंजाब कला परिषद ने उन्हें 2022 में पंजाब गौरव सम्मान से सम्मानित किया।